

---

# Uttishthata Jagrata

---

## उत्तिष्ठत जाग्रत

---

### Document Information

Text title : Uttishthata Jagrata

File name : uttiShThatajAgrata.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc\_z\_misc\_general

Author : G. B. Palsule

Transliterated by : Sudeep Dalbanjan

Proofread by : Sudeep Dalbanjan

Description/comments : Manjusha (vol. Vi) Sep-Nov 1951

Latest update : August 20, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

August 20, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

उत्तिष्ठत जाग्रत



“मिथ्या माया भ्रमो जीवनं”  
मा गासीरिति दीनं गानम् ।  
मृतायतेऽसौ यस्तन्द्रयते  
वस्तुरूपमपि बहु वञ्चयते ॥ १ ॥

सदेव सौम्याऽऽवेहि जीवनं  
तथास्य मरणं नान्त्यं शरणम् ।  
“मृदेव जीवो मृदं प्रयाति”  
आत्मानं तन् नाभिप्रैति ॥ २ ॥

कर्म स्वं स्वं समाचरेम  
दिवसे दिवसे पुरः सरेम ।  
इतीह सृष्टाः सुखं न भोक्तुं  
जगदसारतां न वा शोचितुम् ॥ ३ ॥

इयं यामिनी क्षणस्थायिनी  
यत्र नाटकं दीर्घदशाङ्कम् ।  
हृदि यः स्पन्दो यदप्यमन्दः  
स महायात्रापटहो मन्द्रः ॥ ४ ॥

जगन्नाम्नि विस्तृतरणाजिरे  
घोरेऽस्मिन् संसारसङ्गरे ।  
जय तरसाऽरीन् भव वीरस्तं  
परोत्सार्यमेषो मा भूस्त्वम् ॥ ५ ॥

अनागते वा समतीते वा  
मा भज काले मुदं शुचं वा ।  
वर्तमानमात्रमाद्रियस्व  
श्रीशसाक्षिकं कर्म कुरुष्व ॥ ६ ॥

जीवितक्रमा महाजनानां  
कुर्वन्त्येवं सदा स्मारणम् ।  
शक्यं जीवितमुच्चैः कर्तुं  
पदचिह्नानि च परिरक्षयितुम् ॥ ७ ॥

कालवालुकातले विशाले  
विलोक्य यानि च भविष्यकाले ।  
भवाब्धिपथिको भग्ननौरपि  
धृतिं धारयेदसहायोऽपि ॥ ८ ॥

उत्थानरतो भव तस्मात् त्वं  
भावि भवत्विति निर्भीकत्वम् ।  
भजस्व, शील्य तथाऽखण्डितां  
कर्मशीलतां, फले धीरताम् ॥ ९ ॥

रचयिता - श्री ग. बा. पळसुले

सन्दर्भः (कठोपनिषत् अध्याय १ वल्ली ३ श्लोकः १४)  
उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत ।  
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गम्पथस्तत्कवयो वदन्ति ॥


Arise, awake, find out the great ones and  
learn of them; for sharp as a razor's edge,  
hard to traverse, difficult of going  
is that path, say the sages.

उठो, जागो, वरिष्ठ पुरुषों को पाकर उनसे बोध प्राप्त करो ।  
छुरी की तीक्ष्ण धार पर चलकर उसे पार करने के समान  
दुर्गम है यह पथ-ऐसा ऋषिगण कहते हैं ।

Encoded and proofread by Sudeep Dalbanjan

---

pdf was typeset on August 20, 2024

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

